

## अंग प्रत्यारोपण : हाथ की सफाई

एक मनुष्य के अंग दूसरे मनुष्य को दान करना ही अपने आप में एक कठिन प्रक्रिया होती है, किसी एक जीव का अंग दूसरे जेनेटिक रूप से असम्बंधित जीव को देना तो बहुत ही मुश्किल है। हालांकि वैज्ञानिक इस दिशा में लगातार प्रयासरत हैं मगर सफलता बहुत कम मिली है।

अलबत्ता, 1974 में विलियम समरलिन ने यह करिश्मा करके चिकित्सा जगत में तहलका मचा दिया था। दुख की बात सिर्फ यह रही कि पूरा मामला धोखाधड़ी का था।

उस समय समरलिन न्यूयॉर्क में स्लोअन केटरिंग कैंसर केंद्र में कार्यरत थे और प्रत्यारोपण पर काम कर रहे थे। उन्होंने दावा किया कि जेनेटिक रूप से असम्बंधित जीवों के बीच त्वचा प्रत्यारोपण के मामले में तब ज्यादा सफलता मिलती है जब त्वचा की कोशिकाओं को कुछ सप्ताह तक एक विशेष माध्यम में पनपने दिया जाए। आम तौर पर किसी जीव को दूसरे जीव का ऊतक लगाने पर दूसरे जीव का प्रतिरक्षा तंत्र बाहर से आए ऊतक को नष्ट कर देता है। यदि समरलिन की बात सही थी तो यह बड़ी और सुखद खबर थी।

मगर उनके द्वारा प्रकाशित परिणामों को न तो वे खुद दोहरा सके, न अन्य शोधकर्ता। समरलिन ने किया यह था कि एक काले चूहे की त्वचा (जिसमें मेलेनोसाइट यानी काले रंजक युक्त कोशिकाएं होती हैं) को एक सफेद चूहे (मेलेनोसाइट रहित) में प्रत्यारोपित किया था। सामान्यतः होता यह है कि बाहर से प्रत्यारोपित ऊतक की मेलेनोसाइट कोशिकाएं वहां से हट जाती हैं और उस जगह पर एक भूरा-सा धब्बा बन जाता है। समरलिन का कहना था कि उनके प्रयोग में ऐसा नहीं हुआ था बल्कि वहां काला धब्बा बना था।

जब प्रयोगों को दोहराया न जा सका तो समरलिन को एक अन्य शोधकर्ता के साथ मिलकर वह प्रयोग करने की हिदायत दी गई। जब समरलिन ने देखा कि धब्बा तो भूरा बन रहा है तो उन्होंने चुपके से ब्लैक मार्कर की मदद से उसे काला कर दिया और पकड़े गए। पकड़े जाने का कारण यह था कि जब वह चूहा सफाई कर्मचारियों के हाथ लगा तो उन्होंने देखा कि काला धब्बा अल्कोहल से धोने पर साफ हो जाता है।

समरलिन ने बाद में अपनी धोखाधड़ी कबूल की और कहा कि उन पर सकारात्मक परिणाम प्रकाशित करने का दबाव था और उसी के चलते उन्होंने यह करतूत की थी।

